वर्तमान वैश्विक समस्या एवं वैदिक समाधान

डॉ0 मुकेश कुमार, सहायक प्राफेसर–संस्कृत विभाग,
एल.एस.एम.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पिथौरागढ़–262502 (उत्तराखण्ड),
drmukesh1970@gmail.com

वर्तमान समय में भौतिकवादी सभ्यता ने विश्व में अनेकानेक समस्याओं को जन्म दिया है। वैदिक साहित्य अथाह ज्ञान का भण्डार है। वास्तव में वेदों में सभी धर्मों के श्रेष्ठ तत्त्व समाहित हैं। समाज में रहकर उचित कार्यों को करना बुरे कार्यों का त्याग करना मानव का वास्तविक धर्म कहलाता है। धर्म को जानने वालों के लिए वेदों को परम प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है–

" धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः "[1]

वर्तमान समय में समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने के लिए आध्यात्मिक समाधान की आवश्यकता आज सर्वत्र अनुभव की जा रही है। यदि संसार की रचना, पालन तथा संहार के पीछे हम किसी ईश्वरीय शक्ति को स्वीकार करें तो मानव अपने इन कृत्यों पर अंकुश लगा सकता है। इस विषय में यजुर्वेद में कहा गया है कि यह सम्पूर्ण विश्व ईश्वर से आच्छादित है तथा उसके द्वारा रक्षणीय है।[2] इसी प्रकार के भाव वेदों में अनेकत्र दृष्टिगोचर होते हैं। इस षोध लेख के माध्यम से वैष्विक समाज मे व्याप्त कुछ मूलभूत समस्याओं के वेदोक्त समाधान पर विचार किया गया है।

वर्तमान पर्यावरण समस्या का वेदोक्त समाधान

वर्तमान समय में वैज्ञानिक प्रगति, औद्योगिक एवं तकनीकी के विकास तथा जनसंख्या वृद्धि आदि अनेक कारणों से निरन्तर पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। वर्तमान समय में जल, वायु, आकाश, पृथिवी आदि सभी प्रदूषित हैं, जो मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं हैं। वर्तमान समय में इनकी शुद्धता मानव के लिए प्रमुख चुनौती बन गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकड़ों के अनुसार वायु प्रदूषण के कारण विश्व भर में वर्ष 2012 में 70,लाख लोगों की मृत्यु हुई है।[4] **इन्टरगवर्नमेंटल पैनल आन क्लाइमेट चेंज** (आईपीसी) की वर्तमान रिपोर्ट खुलासा करती है कि पिछले कुछ वर्षों में विष्व में ग्लोबल वार्मिंग के खतरे ज्यादा बढ़े हैं। इन्हीं खतरों में एक है, वैश्विक स्तर पर समुद्र का जल स्तर बढ़ना जिससे समुद्र के किनारे बसने वाले कई देशों/शहरों के डूबने का खतरा बढ़ जाएगा।[3] जहाँ ग्लोबल वार्मिंग के खतरे बढ़ते जा रहे हैं वहीं पवित्र गंगा तथा यमुना नदी के प्रदूषण की भी कई घटनाएं सामने आ रही हैं। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 2012 में माननीय उच्चतम न्यायालय को बताया है कि यमुना नदी का प्रदूषण पहले की तुलना में 100 किमी0 तक (पानीपत से इटावा) बढ़ गया है।[5]

वेदों में हमें पर्यावरण संरक्षण के विषय में अनेक मन्त्र दृष्टिगोचर होते हैं। यजुर्वेद में पवित्र जल एवं उसकी सहायता से उत्पन्न होने वाली औषधियों को नष्ट न करने की प्रार्थना की गयी है–**"माऽपो मौषधीर्हिंसीः."**[6] स्मृति ग्रन्थो में नदी–नालों, तालाबों आदि में मल–मूत्र त्याग तथा थूकने इत्यादि का स्पश्ट निशेध किया गया हैं।[7] अथर्ववेद में कहा गया है कि पृथिवी पर विद्यमान सम्पूर्ण हरे–भरे पर्वत, जंगल इत्यादि नहीं काटने चाहिए। क्यों कि ये तो सभी कल्याण करने वाले हैं। **"गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु"।**[8]

आचार्य याज्ञवल्क्य भी इसी प्रकार की विचारधारा की पुश्टि करते हुए लिखते हैं कि जो वृक्ष हमारे जीवन के साधन हैं, जो लताओं तथा कोपलों से युक्त हैं, ऐसे उपजीव्य (आम ,वट आदि) वृक्षों को काटना कदापि उचित नहीं है। क्योंकि ये तो हमारे लिए लाभकारी हैं। अतः यदि कोई इनको काटता है तो दण्डनीय माना गया है।[9]

नशावृत्ति की समस्या का वैदिक समाधान

वैश्विक समाज में नशावृत्ति विभिन्न रूपों में विद्यमान है। और यह सभी स्तरों को प्रभावित कर रही है। नशावृत्ति की बदलती, बढ़ती प्रवृत्ति सम्पूर्ण विश्व के लिए एक गम्भीर समस्या का रूप धारण करती चली जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकड़ें यह बताते हैं कि दुनिया भर में 25, लाख लोग प्रति वर्ष अल्कोहल के कारण मरते है।[10] आज का युवा वर्ग पारम्परिक नशीले पदार्थों के सेवन के स्थान पर रासायनिक तत्त्वों के सेवन को अच्छा मान रहा है। तुरन्त नशे का सुख प्राप्त करनेवाली यह प्रवत्ति अत्याधिक घातक है। मारिजुआना और कोकिन जैसी गैर कानूनी नशीली दवाओं का सेवन तो अब रासायनिक दवाओं (प्रेस क्रिप्शन ड्रग्स) के मुकाबले बहुत ही कम रह गया है।

कमजोर नियमन और नशे के सौदागरों की कुटिल रणनीति नशे के इस जहर को लोगों की नसों तक पहुंचाने में सफल होते जा रहें हैं। जब कोई व्यक्ति क्षणिक

आनन्द प्राप्त करने के लिए रासायनिक दवाओं, गैर कानूनी नशीलें पदार्थों और अन्य तत्त्वों का उपयोग करता है, ऐसी स्थिति को चिकित्सा विज्ञान में नशा वृत्ति कहा जाता है। ये नशीले पदार्थ नशा करने वाले व्यक्ति को शारीरिक मानसिक और भावनात्मक रूप से आनन्द पहुंचाते हैं। धीरे–धीरे व्यक्ति इस आनन्द को पाने के लिये नशीले पदार्थों का आदि हो जाता है और शारीरिक मानसिक तथा बौद्धिक क्षमता क्षीण होकर मृत्यु तक को प्राप्त कर लेता है। देश में प्रति लाख आबादी पर 39.5, पुरुष लीवर सिरोसिस से मरते हैं। शराब, कोकिन, हेरोइन, एल.एस.डी, मारिजुआना ,स्टेरायड्स, मेथमफेटामाइन,.टी. सी.पी, रोहपनॉल, एक्सटेसी, रासायनिक दवाऐं, निकोटिन प्रमुख हैं। इन नशीले पदार्थों के लम्बे समय तक सेवन करने से दिमाग के काम करने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

भारत में नशा वृत्ति की बढ़ती बदलती प्रवृत्ति देश में गांझा, भांग जैसे प्राकृतिक पदार्थों का सेवन सदियों से चला आ रहा है। लेकिन आर्थिक समृद्धि और संसाधन बढ़ने के साथ भारत में रासायनिक और संश्लेषित नशीली दवाओं के उपयोग में अत्याधिक वृद्धि देखी जा रही है। देश का अमूल्य युवा मानव संसाधन नशे के इस जहर का शिकार बन रहा है। जिससे वह स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्याधिक हानि प्राप्त कर रहा है। भारत में **नारकोटिक्स विभाग** द्वारा चार साल (2009–2013 सितम्बर तक) के दौरान पकड़े गये मादक पदार्थ (किग्रा0 में) कुछ इस प्रकार है।[11]

पदार्थ	2009	2010	2011	2012	2013
अफीम	42	25	53	63	8
कोकीन	12	23	14	44	28
इफेड्रिन	1244	2207	7208	4393	1862
मैनड्रेक्स	5	20	72	216	274
गांजा	208764	173128	122711	77149	45000
चरस	3549	4300	3872	3338	2000
हेरोइन	1047	766	528	1028	863
पोस्तदाना	1732	1829	2348	3625	116

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् पश्चिमी देशों में नशीले पदार्थों का बहुत अधिक प्रचलन हो गया। भारत में भी नशीले पदार्थों का प्रचलन था, परन्तु इसमें भिन्नता थी। केवल अशिक्षित, गरीब वर्ग में इसका अधिक प्रचलन था, परन्तु नशावृत्ति का प्रचलन वर्तमान में शिक्षित वर्ग में भी देखा जा सकता है। हमारे देश में 24.3 करोड किशोर आयु (10 से 19 वर्ष तक) के बच्चे है जिसका अनुपात विश्व जनसंख्या में 18 प्रतिशत है जो भविष्य में राष्ट्र के निर्माण महत्वपूर्ण भूमिका का निभा सकते हैं।

मद्यपान करना वर्तमान समाज में फैशन सा बन गया है। नशावृत्ति नवयुवकों को दिन–प्रतिदिन पतन की ओर अग्रसरित कर रही है। धूम्रपान, मदिरापान, क्लब, विलास आदि दुर्व्यसन पाश्चात्य संस्कृति की देन है। देश में प्रति वर्ष सिगरेट की लगभग 12,215 करोड़ की बिक्री हो रही है। मदिरा का बाजार भी 8,856 करोड़ का है। सिगरेट ,शराब, गुटका–तम्बाकू आदि कैंसर को जन्म दे रहे हैं। गुटका–तम्बाकू जैसे उत्पादों के प्रचलन के कारण प्रतिवर्ष लगभग 5, लाख लोगों की कैंसर से मौत हो जाती हैं।[12] **(स्रोत–विश्व स्वास्थ्य संगठन, केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय)**

मद्यपान करने वाले व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है, जिससे वह अपने व्यवहार एवं भाषा पर नियन्त्रण नहीं कर पाता। वेद में मद्यपान जैसी बुरी आदतों से दूर रहने के लिये उपदेश दिया गया हैं कि मद्यपान नहीं करना चाहिये क्यों कि इससे मति भ्रष्ट होकर व्यक्ति विनाशता को तो प्राप्त होता है।[13]

नशावृत्ति मनुष्य के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने साथ–साथ उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा और माली हालत को भी हानि पहुँचाती है। महर्षि मनु ने मद्यपान को एक बुराई बताया है तथा इसके निषेध का उपदेश दिया है।

" सुरां वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते।
तस्माद् ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यष्च न सुरां पिबेत् "।[14]

वैश्विक आतंकवाद की समस्या का वैदिक समाधान

आतंकवाद एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। और निकट भविष्य में एक भयावह समस्या बनती जा रही है। वर्तमान में कई देश इस समस्या से ग्रस्त हैं। वैदिक काल में आतंकवाद की भयावह समस्या नहीं थी पुनरपि उसके लिए कठोर नियमों का विधान किया गया, जैसे कि ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है कि हे इन्द्र! तुम राक्षसों को समूल नष्ट करो।[15] ऋग्वेद मे अन्यत्र भी आतंकवादियों के शिरच्छेदन का आदेश दिया है।[16] जिससे लोग अपराध करने का अपने मन में कभी विचार ना करें।

वेद में प्रजा को कष्ट देने वाले व्यक्तियों के लिए भिन्न–भिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है। कहीं उन्हें यातुधान और रक्षस् या राक्षस नाम दिया गया है, तो कहीं दस्यु और पिशाच कहा गया है। इनके व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ पर दृष्टि पात करने से भी यह ज्ञात होता है कि ये शब्द प्रजा में आतंक फैलाने वाले व्यक्तियों को ही ध्वनित करते हैं। **यातुधान** का शाब्दिक अर्थ होता है पीड़ा देने वाला। यातु शब्द का अर्थ पीडा या हिंसा वैदिक–साहित्य में सुप्रसिद्ध है। **यातयति वधकर्मा (निघण्टु–2/19)** धातु से इसकी व्युत्पत्ति होती है। **यातुं दधाति इति यातुधानः** अर्थात् जो दूसरे में यातु(पीड़ा) को धारण कराये वह यातुधान। **रक्षस्** या **राक्षस** का अर्थ होता है ऐसे दुष्ट जिनसे लागों की रक्षा की जानी चाहिये–**रक्षितव्यमेभ्यः**। इसका अर्थ छिपकर मारनेवाले या हानि करने वाले भी होता है–**रहः क्षिण्वन्ति इति। दस्यु** उन लोगों को कहते है जो प्रजाओं का क्षय करते हों–**दसु उपक्षये** धातु से यह शब्द सिद्ध होता है–**दस्यन्ति इति दस्यवः**।[17] **पिशाच** शब्द मांसाहारी अर्थ में प्रयोग होता है–**पिशितमश्नाति इति पिशाचः**। या जो लोग पीड़ाजनक कार्यों से लेकर दूसरों को मारकर उनके मांस तक खा जाने वाले घोर कर्म करते हैं अतः पिशाच कहलाते हैं।[18]

अथर्ववेद के एक मन्त्र से यह ध्वनित होता है कि राजा को रात्रि के समय नगर–रक्षा के लिए पहरेदार की नियुक्ति कर देनी चाहिये जिससे सभी नगरवासी निश्चिन्त होकर सो सके । राजा का इतना भय हो कि कोई भी व्यक्ति किसी को कुदृष्टि से न देख सके और सभी स्त्रियाँ निर्भय होकर सो सके, यहाँ तक कि कुत्तों को भी जागकर भौंकने की आवश्यकता न पड़े।[19]

स्वदेश या मानवमात्र से द्रोह करने वालों, अथवा आतंकवाद के द्वारा समाज को छिन्न–भिन्न करने वाले दुष्टों के लिए वेद मृत्युदण्ड देने की व्यवस्था या प्रावधान करता है।[20] वेद के मत में चोर, डाकू आदि समाज, राष्ट्र विरोधी लोगों को अग्नि के मुख में डाल देना चाहिये।[21] जो समाज के प्रति द्वेष भावना वाले हों या दुष्टों
के प्रोत्साहित करते हों,उन सभी को सुखी लकड़ी की तरह जला डालना चाहिये।[22] मनुस्मृति में भी आतंक तथा आततायियों से मुक्ति हेतु उपायों का उल्लेख किया गया है कि कारागार को ऐसे स्थानों पर बनाना चाहिए जहाँ सामान्य लोग उन्हें कठोर दण्ड भुगतते हुए देखें तथा फिर कोई व्यक्ति पाप कार्य में प्रवृत्त न हो।[23]

भ्रूण हत्या की समस्या का वैदिक समाधान

वर्तमान समय में भ्रूण हत्या रूपी अपराध समाज में एक गम्भीर समस्या है। तकनीकी सुविधाओं द्वारा गर्भ में लिंग का पता करके भ्रूण हत्या का महापाप समाज में फैलता जा रहा है। **यूनिसेफ** की एक रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में 20 प्रतिशत भ्रूण या महीने भर के नवजात गर्भ के दौरान हिंसा के कारण मर जाते हैं। यदि गर्भ के दौरान पति की हिंसा से महिलाओं को बचाया जाए, तो नवजात बच्चे की मौत को पर्याप्त सीमा तक कम किया जा सकता है।[24] वेदों में इस समस्या को दूर करने के उपायों के उपदेश अनेक स्थानों पर मिलते हैं। ऋग्वेद एक मन्त्र में भ्रूण हत्या के विषय में इस प्रकार के भाव मिलते हैं।

" चत्तोइतश्चत्तामुतः सर्वाभ्रूणान्यारुषी।
अराय्यं ब्रह्मणस्पते तीक्ष्णशृंगोदृषन्निहि "।।[25]

अर्थात्–अलक्ष्मी सभी भ्रूणों को नष्ट करने वाली है। इसलिए इसका इस लोक तथा परलोक में भी नाश हो, ऐसी कामना है। हे तेजस्वी ब्रह्मणस्पति! तुम इस अलक्ष्मी को संसार से दूर ले जाओ। अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि नौ माह की तपस्या से जो युक्त है वह महान् ऐष्वर्य वाला गर्भ है, उसको प्राप्त हो।[26] एक अन्य मन्त्र में सप्त मर्यादा के रूप में सात महापापों की परिगणना करते हुए कहा गया है कि 1–स्तेय (चोरी) 2–तल्पारोहण (व्यभिचार) 3–ब्रह्महत्या (वेदज्ञविद्वान् की हत्या) 4–भ्रूणहत्या (गर्भपात) 5–सुरापान 6–दुष्कृत (बुरे–निन्द्य) कर्म का पुनः–पुनः करना 7–असत्यभाषण (पाप करने पर उसे छिपाने के लिए झूठ बोलना) ये सात मर्यादाएं (पाप) हैं।[27] इनमें से भ्रूणहत्या जैसे एक भी पाप करने वाला महापापी कहलाता है। स्मृतियों में भी भ्रूणहत्या का निषेध किया गया है। आचार्य मनु ने तो यहाँ तक कहा है कि गर्भपात कराने वाले का देखा हुआ अन्न भी नहीं खाना चाहिए, उसे खाने से पाप लगता है।[28] पुराणों में भी भ्रूण हत्या को महापाप की संज्ञा दी है।[29]

वृद्धसूर्यारुणकर्मविपाक की यह मान्यता है कि गर्भपात करने वाले की अगले जन्म में सन्तान नहीं होती। जो स्त्री पूर्व जन्म में गर्भपात करने वाली होती है वह इस जन्म में गर्भपात का दुःख भोगने वाली होती है, अर्थात् उसके संतान नहीं होती। यदि कोई स्त्री यह पूछती है कि मैं इस जन्म में वन्ध्या (संतानहीन) क्यों हुई तो इसका सीधा सा उत्तर है कि वह उसके पूर्व जन्म में किये गये गर्भपात का ही फल है। जो स्त्री पूर्व जन्म में गर्भपात करती है उसके इस जन्म में उस पाप के कारण गर्भ नहीं ठहरता अर्थात् वह स्त्री निःसंतान ही जीवन यापन करती है।[30]

महानिवार्ण तन्त्र में कहा गया है[31] कि गर्भाधान से लेकर पाँच माह के बीच जो नारी जान बूझकर गर्भ गिरा दे उस नारी को और गर्भ गिराने का उपाय करने वाले पुरुष को राजा कठोर दण्ड दे। पाँच माह के पश्चात् जो स्त्री गर्भ गिराने अथवा पुरुष उपाय कर दे तो वे दोनों वध करने वाले के समान महापातकी होते हैं। भ्रूण हत्या सामाजिक कलंक है, जो कि वर्तमान में वैश्विक समस्या का रूप धारण करती जा रही है। इसका समाधान भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को न करने से ही सम्भव है।

महिला उत्पीड़न का वेदोक्त समाधान

16,दिसम्बर..2012 में दिल्ली में 23वर्शीया 'दामिनी' 'निर्भया'के साथ हुए सामुहिक.बलात्कार और फिर उसकी मौत ने मानव के समक्ष कई प्रश्न खड़े कर दिये हैं।राश्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो वर्श 2011 के अनुसार महिलाओं पर होने वाली आपराधिक घटनाओं में 996.मामलें पंजीकृत किये गये। जिसमें 129 बलात्कार, 283 अपहरण, 307 परिवार और पति द्वारा अमानवीय व्यवहार, 116 छेड़छाड, 72 यौन उत्पीडन के मामलें पंजीकृत किये गये।[32] राश्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो वर्श 2012 के आंकड़ें बताते हैं कि कठोर कानून और दहेज हत्या विरोधी प्रयासों के बावजूद आबादी में लगभग 49 प्रतिशत भागीदारी रखने वाली महिलाओं के 8,233, दहेज हत्या के मामलें पंजीकृत हुए।[33] जो कि न केवल घरेलू हिंसा अपितु मानवता के प्रति भी जघन्य अपराध है।

यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में दस में से 6, लडकियां दो से चौदह वर्ष की आयु के मध्य होती है शारीरिक हिंसा की शिकार। महिलाओं के विरुद्ध होने वाली यौन हिंसा की घटनाओं पर दृष्टिपात करें तो वर्ष 2011 से 2013 के बीच देश भर में बलात्कार के 82,236 मामले दर्ज किये गये; अर्थात् 75 मामले प्रतिदिन या हर घण्टे में तीन बलात्कार। इनमें से 70,105 मामलों में आरोप पत्र दायर किये गये, किन्तु 12,736 मामलों में ही दोष सिद्ध हो सका। आगे स्थिति और बदतर हुई। इस अवधि में 1,12,110 लोगों को गिरफ्तार किया गया, और 93,217 आरापी बनाए गये। इनमें महज 17,437 को ही (अर्थात् पाँच अरापियों में से एक को) सजा मिली।[34]

कॉमनवेल्थ ह्यूमन राइट्स इनीशिएटिव (सी.एच.आर.आई.) के अनुसार 2001 से 2013 के बीच देश के 28 राज्यों में बलात्कार की 2,64,130 घटनाए सामने आयी, अर्थात् प्रतिदिन बलात्कार की लगभग 56 घटनाएं हुई। 2001 में सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में बलात्कार की 16,075 की घटनाएं सामने आयी, वहीं 2013 में यह आंकड़ा 52.30 प्रतिशत बढ़कर 33.707 पर पहुँच गया।[35] भारत में यौन हिंसा की शिकार बेटियों की स्थिति अत्यन्त भयावह है जिसको कि एक तालिका में दिये आंकड़ों के माध्यम से जाना जा सकता है।[36]

43 प्रतिशत	20 प्रतिशत	77 प्रतिशत	10 प्रतिशत
यौन हिंसा पीड़ित लडकियां 19 वर्ष या उससे पहले होती हैं शिकार	भ्रूण या महीने भर के नवजात गर्भ के दौरान हिंसा के कारण मर जाते हैं उत्तर प्रदेश में	किशोर (15 से 19 वर्ष) लडकियां देश में पति या साथी की यौन हिंसा की शिकार	लड़कियों को दुनिया भर में 20 वर्ष से पहले जबरन यौन हिंसा का शिकार होना पड़ता है

स्रोतः–यूनिसेफ

अन्ततः इन सबका उत्तरदायी कौन है? क्या मात्र शासन, पुलिस या जनता को उत्तरदायी माना जाये ? जहाँ सारा शरीर ही विषाक्त हो और बुद्धि में भी विकृति आ गयी हो ऐसे में उपचार रोग के मूल में जाकर ही सम्भव है। इन सारे प्रश्नों का समाधान मात्र कुछ दिनों में नहीं खोजा जा सकता। इन समस्याओं का पूर्ण समाधान मूल में सुधार से ही सम्भव है।

आज अपनी संस्कृति तथा अपने अतीत को जानने की आवश्यकता है।आदर्श मनुष्य में ही सद्विचार उत्पन्न.हो सकते हैं। इसलिए वेद का मानव जाति के लिए सबसे पहला उद्घोष है कि जीवन में इतने ऊँचें उठों जितना आकाश में सूर्य है। ऋषि मुनियों के पद चिह्नों पर चलकर मननशील एवं अच्छे मानव बनों।[37] चारित्रिक दुर्बलता के कारण ही वर्तमान समय में महिला उत्पीड़न की कई घटनायें सामने आ रही हैं।

वेदों में जहाँ शुद्ध आचरण की बात कही गयी है, वहीं आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया है।[38] वैदिक काल में नारी को आदरणीय स्थान दिया गया है। ऋग्वेद में नारी को घर कहा गया है।[39] नारी के सम्मान की यह प्रक्रिया न केवल वैदिक काल में ही थी अपितु स्मृति काल में भी यह प्रक्रिया अविच्छिन्न रही, अतः एव मनु का कथन है कि जिस देष, समाज, जाति में नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है और जहाँ इनका निरादर होता है, वहाँ सारे कार्य निश्फल हो जाते हैं।[40]

पारिवारिक विघटन की समस्या का वेदोक्त समाधान

वर्तमान समय में पारिवारिक विघटन की समस्या एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। वर्तमान समय में भौतिकवादी विचारधारा ने मनुष्य को स्वार्थी तथा आत्मकेन्द्रित बना दिया है। माता–पिता भी सन्तानों के प्रति अपने दायित्वों को भूल रहे हैं। परिवारों के विघटन का जो भयावह रूप आज पश्चिमी समाज

में हमे दिखाई दे रहा है, यही रूप भारतीय समाज में प्रविष्ट न हो इस विषय में हमें वेदोक्त समाधान को ध्यान में रखना चाहिए।

वैदिक काल में पारिवारिक जीवन संयुक्त परिवार प्रथा पर आधारित था। पिता ही परिवार का गृहपति होता था। माता–पिता के कर्तव्य में कहा गया है कि सन्तान को ऐसा संरक्षण दें कि उनकी संतान योग्यतम बनें। उनका संरक्षण अमृततुल्य हो।[41] वेद के एक मन्त्र में उपदेष दिया गया है कि पिता अपनी सन्तान के लिए उत्तम ज्ञान देने वाला, सुखों का साधक तथा उत्तम पदार्थों को प्रदान करने वाला होना चाहिए।[42] एक अन्य मन्त्र में कहा गया है कि गृहस्थों! हमारे जिस प्रकार देव अर्थात् विद्वान् लोग परस्पर पृथक् भाव वाले नहीं होते और परस्पर द्वेष कभी नहीं करते हैं, वही कर्म तुम गृहस्थों के घर में करता हूँ। सब पुरुषों के लिए यह संज्ञान है कि सब परस्पर प्रीति पूर्वक व्यवहार कर धन ऐश्वर्य को प्राप्त करें।[43]

हे गृहस्थो! जैसे तुम्हारा पुत्र माता के साथ प्रतियुक्त मन वाला, अनुकूल आचरणयुक्त और पिता के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का प्रेम वाला होवे, वैसे तुम भी पुत्रों के साथ सदा वर्ता करो। जैसे स्त्री पति की प्रसन्नता के लिए माधुर्य गुणयुक्त वाणी को कहे, वैसे पति भी षान्त होकर अपनी पत्नी से सदा मधुर भाशण किया करे।[44] हे गृहस्थो! तुम्हारे में भाई–भाई के साथ द्वेश न करे और बहिन–बहिन से द्वेश न करे तथा बहिन–भाई भी परस्पर द्वेश मत करो किन्तु सम्यक् प्रेमादि गुणों से युक्त समान गुण–कर्म स्वभाव वाले होकर मंगलकारक रीति से एक दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करो।[45]

हमारे ऋषि–मुनियों की यह मान्यता रही है कि जिस कुल में पत्नी से पति तथा पति से पत्नी सन्तुष्ट रहती है, प्रसन्न रहती है उस कुल में अवश्य ही सर्वदा कल्याण होता है और दोनों परस्पर अप्रसन्न रहें तो उस कुल में नित्य कलह वास करता है।[46] कल्याण चाहने वाले पिता, भाई, पति और देवर को चाहिये कि वे सदा (विवाह के बाद भी) अपनी कन्या, पत्नी, भाभी, स्त्रियों का पूजन (आदर–सत्कार) अर्थात् यथायोग्य मधुर भाषण, भोजन ,वस्त्र, आभूषण आदि से प्रसन्न रखें, उन्हें कभी क्लेश न देवें।[47]

निष्कर्ष

उपर्युक्त वैदिक सन्दर्भों एवं समाधानों को दृष्टिगत रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान समय में वैश्विक समाज में व्याप्त अनेकानेक समस्याओं का उचित समाधान वेदोक्त मार्ग पर चलकर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग दिखाई नहीं देता–

''नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ''(यजु0–31/18) महापुरुषों के मुख से निकले वचन अक्षुण्ण हो जाते हैं। उनके विचारों की यथार्थता प्रत्येक युग में प्रासांगिक और प्रेरक बनी रहती है। वेद प्रत्येक सामाजिकपक्ष में आदिकाल से ऋषि–मुनियों के चिन्तन का आधार रहा है–

''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्''(मनु0–2/6) महर्षि मनु का मन्तव्य भी वैश्विक समस्याओं के वेदोक्त समाधान

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' (ऋग्–9/63/5) की ही पुष्टि करता हैं।

''चातुर्वर्ण्य त्रयो लोकाष्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति''॥ (मनु0–12/96)

सन्दर्भ

1- मनुस्मृति–2/92,

2- यजुर्वेद–40/1,

3- अमर उजाला– 4, अप्रैल–2014 ,नैनीताल संस्करण

4- अमर उजाला– सम्पादकीय 28,मार्च–2014 नैनीताल संस्करण ,

5- अमर उजाला– पृष्ठ–17, 12 जनवरी 2014 ,नैनीताल संस्करण

6- यजुर्वेद–6/22,

7- (क) याज्ञवल्क्यस्मृति व्यवहाराध्याय–13, श्ठीवनासृक्षकृन्मूत्रेरेतांस्यप्सु न निक्षिपेत्।

(ख) षाण्डिल्य स्मृति–2/23,

न गण्डूशं जले क्षिपेत्।

(ग) मनुस्मृति–4/56,

नाप्सु मूत्रं पुरीशं वा श्ठीवनं वा समुत्सृजेत्। अमेध्यलिप्तमन्यद् वा लोहितं वा विशाणि वा॥

8- अथर्ववेद, 12./1/11,

9- याज्ञवल्क्यस्मृति व्यवहाराध्याय–137, प्ररोहिशाखिनां शाखास्कन्धसर्वविदारणे। उपजीव्य द्रुमाणां च विंशतेर्द्विगुणो दमः॥

10- अमर उजाला–सम्पादकीय, 6,मार्च– 2015, नैनीताल संस्करण

11- दैनिक जागरण, पृष्ठ–13, 9,नवम्बर–2014 ,हल्द्वानी संस्करण

12- अमर उजाला– सम्पादकीय 18, नवम्बर–2014 ,नैनीताल संस्करण

13- ऋग्वेद–8/2/12, ह्रत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। ऊधर्न नग्ना जरन्ते॥

14- मनुस्मृति, 11/93,

15- ऋग्वेद– 3/30/17, उद् वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र।

16- ऋग्वेद, 1/133/2, शीर्षा यातुमतीनाम्।

17- वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त, अभ्युदय.काण्ड (आचार्य प्रियव्रत) पृष्ठ–293, मीनाक्षी .प्रकाशन मेरठ, 1983 .

18- वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त, अभ्युदय.काण्ड (आचार्य प्रियव्रत) पृष्ठ–302, मीनाक्षी. प्रकाशन मेरठ, 1983

19- अथर्ववेद, 4/5/2,

20- ऋग्वेद, 17/104/.7, हतं द्रुहो रक्षसो भंगुरावतः।

21- यजुर्वेद–11/77, ये स्तेना ये च तस्करास्ताँस्ते अग्ने अपि दधामि आस्ये।

22- यजुर्वेद–11/77, अमित्रान्.....यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।

23- मनुस्मृति, 9/288–289, बन्धानानि च सर्वाणि राजा मार्गे निवेषयेत्।

दुःखिताः यत्र दृष्येरन् विकृताः पापकारिणः।।

प्राकारस्य च भेत्तारं परिखाणां च पूरकम्।

द्वाराणां चैव भंकारं क्षिप्रमेव प्रवासयेत् ।।

24- अमर उजाला– सम्पादकीय 3, अक्टूबर–2014 ,नैनीताल संस्करण

25- ऋग्वेद, 10/155/2,

26- अथर्ववेद, 3/10/12, एकाश्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम्।

27- ऋग्वेद, 10/5/6, निरुक्त–6/5, सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुतासामेकामिदभ्यंहुरोगात्।

28- (क) मनुस्मृति–4/208,'अन्नादेः भ्रूणहा मार्ष्टि'।

(ख)– अग्निपुराण– 173/33,

29- 29. ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्ण0–85/63,.गर्भघ्नश्च महापापी सम्प्राप्नोति शुनीमुखम्।।

30- वृद्धसूर्यारुणकर्मविपाक –477/1, पूर्वे जनुषि या नारी गर्भघातकरी ह्यभूत्।

गर्भपातेन दुःखार्ता साऽत्र जन्मनि जायते।।

659/1,856/1, वन्ध्येयं या महाभाग पृच्छति स्वं प्रयोजनम्।

गर्भपातरता पूर्वे जनुष्यत्र फलं त्विदम्।।

1187/1, गर्भपातनपापाढ्या बभूव प्राग्भवेऽण्डज।

साऽत्रैव तेन पापेन गर्भस्थैर्य न विन्दति।।

31- महानिर्वाण तन्त्र, उल्लास–99, पृ0–471

32- मिषन इन हिमालया (सम्पा0–जगत मर्तोलिया) पृष्ठ–13, जिला पंचायत परिसर, प्रथम तल सिल्थाम, पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड) सितम्बर–2014

33- अमर उजाला– सम्पादकीय 28, मार्च– 2014 नैनीताल संस्करण ,

34- अमर उजाला– सम्पादकीय 14, मार्च– 2015 नैनीताल संस्करण

35- अमर उजाला– पृष्ठ–17, 15, मार्च– 2015 नैनीताल संस्करण

36- अमर उजाला– सम्पादकीय 3, अक्टूबर–2014 ,नैनीताल संस्करण

37- ऋग्वेद–10/53/6, तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।

38- यजुर्वेद–1/7, प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो, निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातयः।

39- ऋग्वेद–3/ 53/4, जायेदस्तम्।

40- मनुस्मृति–3/56, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतांस्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।

41- ऋग्वेद–1/159/2, सुरेतसा पितरा भूम चक्रतुरुरु प्रजाया अमृतं वरीमभिः।

42- ऋग्वेद–1/1/9. स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्व नः स्वस्तये ।

43- अथर्व0–3/30/3, येन देवा न वियन्ति नो च विद्वषते मिथः।

तत्कृण्वो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः।।

44- अथर्व0–3/30/2, (स्वामी दयानन्द भाश्य–संस्कार विधि, गृहस्थ आश्रम प्रकरण)

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु षन्तिवान्।।

45- अथर्व0–3 / 30 / 3, (स्वामी दयानन्द भाश्य–संस्कार विधि, गृहस्थ आश्रम प्रकरण)

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।

सम्यंचः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।

46- मनुस्मृति–3 / 60, सन्तुष्टो भायया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।

यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।

47- मनुस्मृति–3 / 55, पितृभिभ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।

पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः।।

Copyright © 2015, Dr. Mukesh Kumar. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.